आचार्य सिद्धसेन

जीवन-परिचय : आचार्य सिद्धसेन की गणना दर्शन-प्रभावक आचार्यों में की जाती है। ये अपने समय के विशिष्ट विद्वान, वादी और कवि थे और तर्कशास्त्र में अत्यन्त निपुण थे। आचार्य सिद्धसेन के जीवनवृत्त के सम्बन्ध में 'प्रभावकचरित्र' में वर्णित है कि उज्जयिनी नगरी के कात्यायन गोत्रीय देवर्षि ब्राह्मण की देवश्री पत्नी के उदर से इनका जन्म हुआ था। ये प्रतिभाशाली और समस्त शास्त्रों में पारंगत विद्वान थे। गुरु वृद्धवादि ने इनका दीक्षानाम कुमुदचन्द्र रखा। आगे चलकर ये सिद्धसेन के नाम से प्रसिद्ध हुए। आचार्य सिद्धसेन दार्शनिक और कवि दोनों हैं। जहाँ उनका काव्यत्व उच्च कोटि का है, वहीं उनका दार्शनिक विवेचन भी गूढ़ गम्भीर है।

आचार्य सिद्धसेन का समय ईसा की पहली-दूसरी शताब्दी का माना जाता है।

रचना-परिचय : आचार्य सिद्धसेन ने दो ग्रन्थों की रचना की है—

1. **सन्मतिसूत्र :** प्राकृत भाषा में लिखित न्याय और दर्शन का यह अनूठा ग्रन्थ है। आचार्य ने नयों का विवेचन कर जैन न्याय की सुदृढ़ पद्धति का आरम्भ किया है। कथन करने की प्रक्रिया को 'नय' कहा गया है और विभिन्न दर्शनों का अन्तर्भाव विभिन्न नयों में किया है। इस ग्रन्थ में 3 काण्ड हैं :

   क. नय काण्ड में 54 गाथाएँ हैं। इसमें नय और सप्तभंगी का कथन है।

   ख. ज्ञानकाण्ड में 43 गाथाएँ हैं। इसमें केवलज्ञान और केवलदर्शन का अभेद स्थापित किया गया है।

   ग. सामान्य-विशेषकाण्ड या ज्ञेयकाण्ड में 69 गाथाएँ हैं। इसमें पर्याय और गुण में अभेद की स्थापना की गयी है।

2. **कल्याण-मन्दिर-स्तोत्र :** इस स्तोत्र में 44 पद्यों में भगवान पार्श्वनाथ की स्तुति की गयी है।